संताप के दायरे में रह रही नारी की अवस्था
Santap Ke Dayre Mein Reh Rahi Naari Ki Awastha

Tajinder Kaur

Research Scholar, Singhania, University, Rajasthan, India

सरांशः राजनीति हो या साहित्य, फिल्म हो या पत्रकारिता व्यापार हो या समाज–सेवा, खेल हो या विज्ञान डाक्टर हो या अभियन्ता, नेता हो या अभिनेता या फिर प्रकाशक सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने आज बाजी मार ली है परन्तु प्राचीन काल, वैदिक काल, उतर वैदिक काल, जैन काल, बौद्व काल, ब्रिटिश काल में नारी की स्थिति बहुत दयनीय थी । बीसवीं शर्ती के पूर्वार्इ तक अपने पांव पर खडी औरत चल नही पाती थी किंतु इक्कसवी शती के पूर्व में टूटकर बिखरने की बजाए वह लडने की हिम्मत जुटा चुकी है । आज नही इस संताप से पीडित नही है अपितु उसने इस संताप को अपना अबलम्ब बनाकर उससे बाहर निकलने का रास्ता भी ढूँढ लिया है और इसी कारण वह तरक्की की सीढियों पर निरन्तर अग्रसर दिखाई दे रही है ।

सांकेतिक शब्द :– नारी, अबलम्न, समाज, परिदृष्टि

----------♦----------

प्रस्तावना :

हमारे भारत देश में महिलाओं को सदैव ही कोमल, त्याग, करूणा एवं प्रेम की मूर्ति समझा जाता है परन्तु आज नारियों ने यह सिद्व कर दिया है कि वह किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नही है । आज वह अपने घर की दहलीज को पार कर बाहर निकलकर कार्यक्षेत्र में आगे बढ गई है और अपने इस कार्य कौशल के द्वारा नारियों ने समाज में एक अलग स्थान बना लिया है । पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि प्रथाएं प्रचलित थी । बाल विवाह किए जाते थे । आर्थिक स्वतनत्रता नही थी आदि इस प्रकार के बंधनो मं स्त्रियो को रहना पडता था । परन्तु धीरे–धीरे स्त्री ने अपने आपको गुलामी से मुक्त कर लिया । आजादी के बाद स्त्री देश की प्रगति का अहम भाग बनी है । आज इक्कीसवी सदी को महिलाओं की सदी कहा जाता है । इतना आगे बढ़ने के बाद भी सच्चाई यह है कि हजारो वर्षो की यह मान्यता हे कि स्त्री को पुरूष के संरक्षण की आवश्यकता होती है परिवर्तित नही है और इस कारण वह दोहरे भार में दब रही है । आज भी उसको समाज में दोयम दर्जे का स्थान मिला है आज भी उसको अपने अधिकारों के लिए लडना पडता है । स्वतंत्रता के बाद शिक्षा ने नारियों को जीवन स्तर को उठाने की आकांक्षाओं बौद्विक सम्पन्नता अधिकार सजगता ने स्त्री को पुरूष की आर्थिक पराधीनता से मुक्त कर स्वयं अर्थोपार्जन का दायित्व अधिकार दिया । अब नारी यह जान गई है कि पुरूष केवल उसी स्त्री को सम्मानित मानता है जो आर्थिक रूप से उसके समकक्ष हो । आर्थिक पराधीनता समाप्त होने के कारण आज पत्नी भी पति के जितना सम्मान पाने लगी है । आज वह अपनी कमाई के पैसों को अपनी इच्छा अनुसार खर्चती है । आज वह पुरूष को पीछे धकेल स्वयं आगे बढने लगी है । अर्थ स्वतंत्र नाररी जैसे ही अपनी स्वतंत्र सता को स्थापित करने के लिए प्रयत्नरत होती है पुरूष इसे अपने एकाधिकार में चुनौती ही समझता है । स्वतंत्र नारी विवाहिता या अविवाहिता पहले की तरह पति या परिवार पर निर्भर, प्रेमी या पति की इच्छाओं पर नाचती दया और सम्मान चाहती, अभागिन या आपकी दासी नही, बराबरी के हक की प्रतीक्षा और मांग करती रूढिमुक्त नारी है क्योकि पुरूष के साथ उसका सम्बन्ध आज सच्चे अर्थो में मुक्त और स्वतन्त्र है । परन्तु जब पत्नी नौकरी करती है तो उसे अपने पति तथा परिवार के अन्य सदस्यों का अविश्वास भी झेलना पडता है यह अविश्वास उसे चुभता है नश्तर की भांति भीतर काटता रहता है । यदि स्त्री किसी अध्यन कार्य से लगी होतो पति बुरा नही मानता परन्तु यदि वह किसी प्रतिष्ठित पद पर पुरूषों के साथ करती है, अपने व्यवसाय को गम्भीरतापूर्वक लेती है तो पति का संदेही स्वभाव दाम्पत्य सम्बन्धों को ठेस पहुंचाता है पत्नी दिन–रात की शंकालु दृष्टि को नही झेल सकती, विशेषतया तब जब वह निरपराध हो । इस प्रकार एक कामकाजी नारी जोकि अपने घर से दूर रहकर काम करती है उसके लिए आवास की समस्या उत्पन्न होती है । जिसे उसे झेलना पडता है । यह कामकाजी नारी के लिए एक मुख्य समस्या है । इस प्रकार स्त्री घर से बाहर कदम रखकर निःसन्देह धन के अभाव से मुक्ति प्राप्त कर ली है परन्तु इस उपलब्धि की प्राप्ति के पीछे उसे हर कदम पर तनावों व संघर्षो से दो–चार होना पड रहा है ।

उद्देश्य :–

1. संताप के दायरे में और संताप के बाहरी दायरे में काम–काजी महिलाओं का अध्यन ।
2. प्राचीन काल से 21वीं सदी की नारी की तुलना तथा अवस्था का दृशांत ।
3. संताप के दायरे में रह रही काम–काजी महिलाओं पर एक परिदृष्टि ।

शोध–परिदृष्टि :

आज की नारी अपने घर की दहलीज को पार कर बाहर निकलकर कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ गई है और अपने इस कार्य कौशल के द्वारा नारियों ने समाज में एक अलग स्थान बना लिया है । जहां एक और वह देश के अन्दर विभिन्न चुनौतियों का सामना करती हुई समाज की सेवा कर रही है वही घर से निकलकर पूरे विश्व परिदृश्य में प्रगति पथ पर बढते हुए प्रगतिशील है । फ्रांस के किसी आदमी ने लिखा था कि किसी भी देश की स्थिति को देखने का सबसे श्रेष्ठ उपाय उस देश की स्त्रियों की स्थिति का पता लगाना है । इतना आगे बढने के बाद भी सच्चाई यह है कि हजारों वर्षो की यह मान्यता है कि स्त्री को पुरूष के संरक्षण की आवश्यकता होती है परिवर्तित नही है और इस कारण वह दोहरे भार में दब रही है । आजकी नारी दम्पति के दाम्पत्य में वैयक्तिक स्वार्थी, आवश्यकताओं, भाग–दौह, आर्थिक कारणों आदि से सम्बन्धों में कई बार नीरसता आ जाती है । यदि पत्नी घर से बाहर जाकर नौकरी करती है तो उसे उसके पति का पूर्ण सहयोग प्राप्त नही होता । पति–पत्नी के सम्बन्धों में अकसर तनाव उत्पन्न होता है । आज स्त्री जब कामकाजी होती है तो पति और पत्नी के सम्बन्ध में समस्या उत्पन्न होती है । आज स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ रही है परन्तु फिर भी बहुत से क्षेत्रों में स्त्रियों के कामकाज पर उंगली उठाई जाती है । जब कोई स्त्री धर में विद्रोह कर काम–काज के लिए बाहर जाती है तो उसे अपने परिवार की प्रताड़नाओं को सहारना पडता है । इस प्रकार कामकाजी नारी के लिए यह मुख्य समस्या है कि वह अपने पति की इच्छा के बिना नौकरी नही कर पाती । पुरूष स्वयं चाहे कुछ भी करे परन्तु यदि वह काम स्त्री करती है तो उसपर तरह तरह के संदेह करने लगता है । कामकाजी नारी के लिए सबसे बडी मुश्किल उनसे की जाने वाली अपेक्षाएं है । किसी अविवाहिता के अंतरमन में झांकर दर्द का सैलाब फूटने को मचलता है । अनेक प्रौढ़ कुमारियों ने अपने परिवार के हितों के लिए अपना जीवन का त्याग तक कर दिया । घर के बाहर काम करने वाली स्त्रियों का क्षेत्र बहुत व्यापक है । स्कूलों, दफतरों, चिकित्सालयों, संस्थानो से लेकर होटलो तक स्त्री कार्यरत है । पढी लिखी लडकियां दफतरों में कर्मचारी ही नही अधिकारी भी बनती है । जब एक स्त्री कार्य हेतू घर से बाहर जाती है तो उसे अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है । उनके लिए अवकाश की बहुत समस्या उत्पन्न होती है ।

निष्कर्ष :–

पर्दा प्रथा, सती प्रथा, आदि प्रथाएं प्रचलित थी, बाल विवाह किए जाते थे । आर्थिक स्वतन्त्रता नही थी आदि इस प्रकार के बंधनों में स्त्रियों को रहना पडता था । स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा ने नारियों के जीवन स्तर को उपर उठाने की आकांक्षाओं बौद्विक सम्पन्नता अधिकार सजगता ने स्त्री को पुरूष की आर्थिक पराधीनता से मुक्त कर स्वयं अर्थोपार्जन का दायित्व अधिकार दिया । कामकाजी दम्पति के दाम्पत्य में वैयक्तिक स्वार्थो, आवश्यकताओं, भाग–दौड आर्थिक कारणों आदि से सम्बन्धों में कई बार नीरसता आ जाती है । इस प्रकार कामकाजी स्त्री के लिए यह एक समस्या है कि वह अपने पति की इच्छा के बिना नौकरी नही कर पाती । इस प्रकार नारी ने नौकरी करके घन कमा लिया है परन्तु इस उपलब्धि की प्राप्ति के लिए उसे अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडा ।